एकलव्य को प्रकाशन

ऊंदरा के लादी पेम्सिल

फोटू ने वारता

वी. सुतेयेव

ऊंदरा के लादी पेम्सिल

फोटू ने वारता
वी. सुतेयेव

एकलव्य
को प्रकाशन

ऊंदरा के लादी पेम्सिल

एक फोटू वाली वारता

चित्र एवं कहानी : वी. सुतेयेव

मालवी अनुवाद : के. आर. शर्मा

रटोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की फोटू वाली वारता।
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से अंग्रेज़ी से अनुदित एवं प्रकाशित।

या किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन के
सर रतन टाटा ट्रस्ट की पईसा की मदद से छापी।

दिसम्बर, 2000 / 1000 प्रतियाँ
कीमत रु. 10.00

या किताब हिन्दी, अंग्रेज़ी, मराठी, बांग्ला, तेलुगु, उड़िया,
छत्तीसगढ़ी, गुजराती और बुन्देली में भी मलेगा।
कुल किताब – 30,000

प्रकाशक

एकलव्य,
ई–1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल – 462 016, म. प्र.
फोन : (0755) 463380, फैक्स : (0755) 461703
ईमेल : eklavyamp@vsnl.com

भंडारी छापखाना, भोपाल में छापी।

THE MOUSE AND THE PENCIL

A picture story

Text and Illustrations - V. SUTEYEV
Translation - K. R. Sharma

From STORIES AND PICTURES
Progressive Publishers, MOSCOW

Published with the financial assistance from
Ministry of Human Resource Development,
Government of India and Sir Ratan Tata Trust.

December, 2000 / 2000 copies
Price : Rs.10.00
This book is also published in these languages - Hindi Gujarati, Bangla, Telugu, Oriya, Chatteesgarhi, Marathi, Bundeli and English. Total copies 30000.

Published by:
EKLAVYA
E-1/25, Arera Colony
Bhopal - 462 016 (M.P.)
Phone (0755) 463380, Fax (0755) 461703
email : eklavyamp@vsnl.com

Printed at Bhandari Offset Printers, Bhopal

ऊंदरा के लादी पेम्सिल

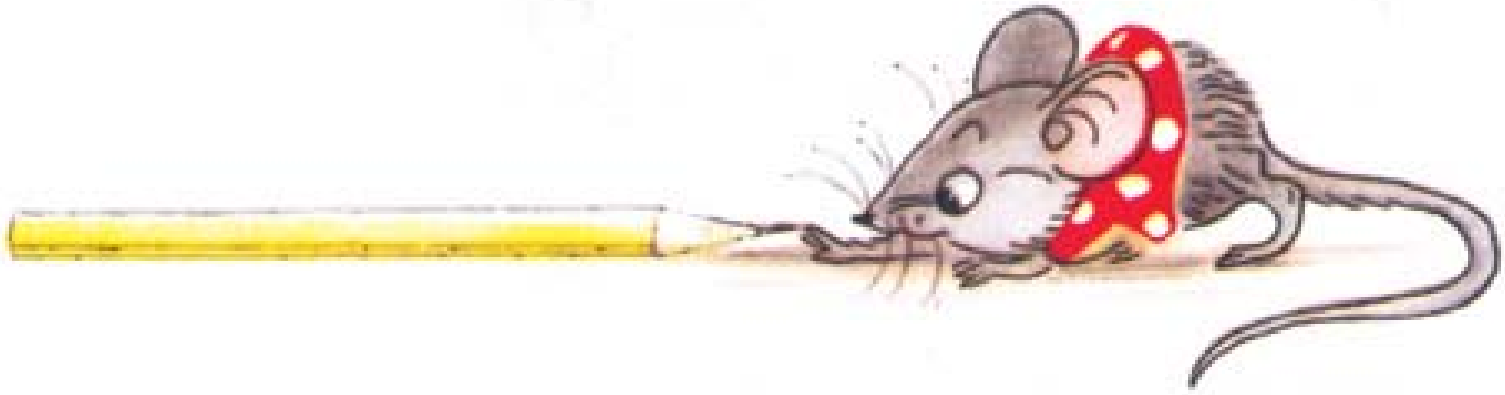

एक बखत एक ऊंदरा के भूख लागी तो खावा सारू ढूंढी रियो थो। एतरा में उके मलीगी एक पेम्सिल।

पेम्सिल लई ने ऊंदरो दर में भरई ग्यो।

''म्हंखे छोड़ी दे रे, म्हंखे जाणे दे।'' पेम्सिल ऊंदरा से बोली, ''म्हंने थारो कई बिगाड़यो। हूं थारा हाथ जोडूं। हूं तो लकड़ी को बटको हूं। खावा में भी अच्छी नी लागूंगा।''

''हूं तने कतरूंगा।,'' ऊंदरो वोल्यो। ''म्हंखे अपणा दांत धसी के छोटा ने तीखा करवा के कईं ने कईं चीज कतरनो पड़े हे। एतरो कई ने ऊंदरो पेम्सिल के दांत से कतरवा लाग्यो।

''ऊं.. ऊं.. म्हंखे दुखी रियो हे।''
पेम्सिल करांजी ने बोली। ''म्हंखे
एक आखरी फोटू
मांडी लेवा दे।
फेर जो मरजी
हो करी
लीजे।

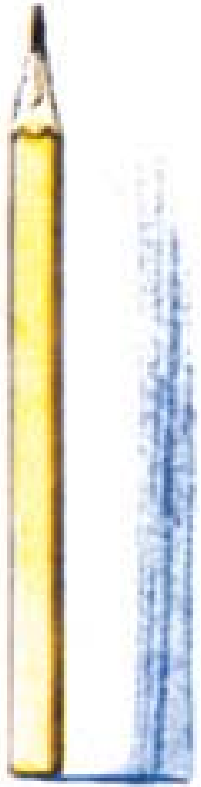

''अच्छो, थारी वात मानी,'' ऊंदरो बोल्यो, ''तू फोटू
मांड। फेर हूं कतरी-कतरी ने थारा बटका करी दूंगा।''

पेन्सिल की जान में जान अई।
अबे पेन्सिल ये एक बड़ो सो
गोलो मांड्यो। यो
तो पणीर को
बटको है। ऊंदरो
ये पूछ्यो।

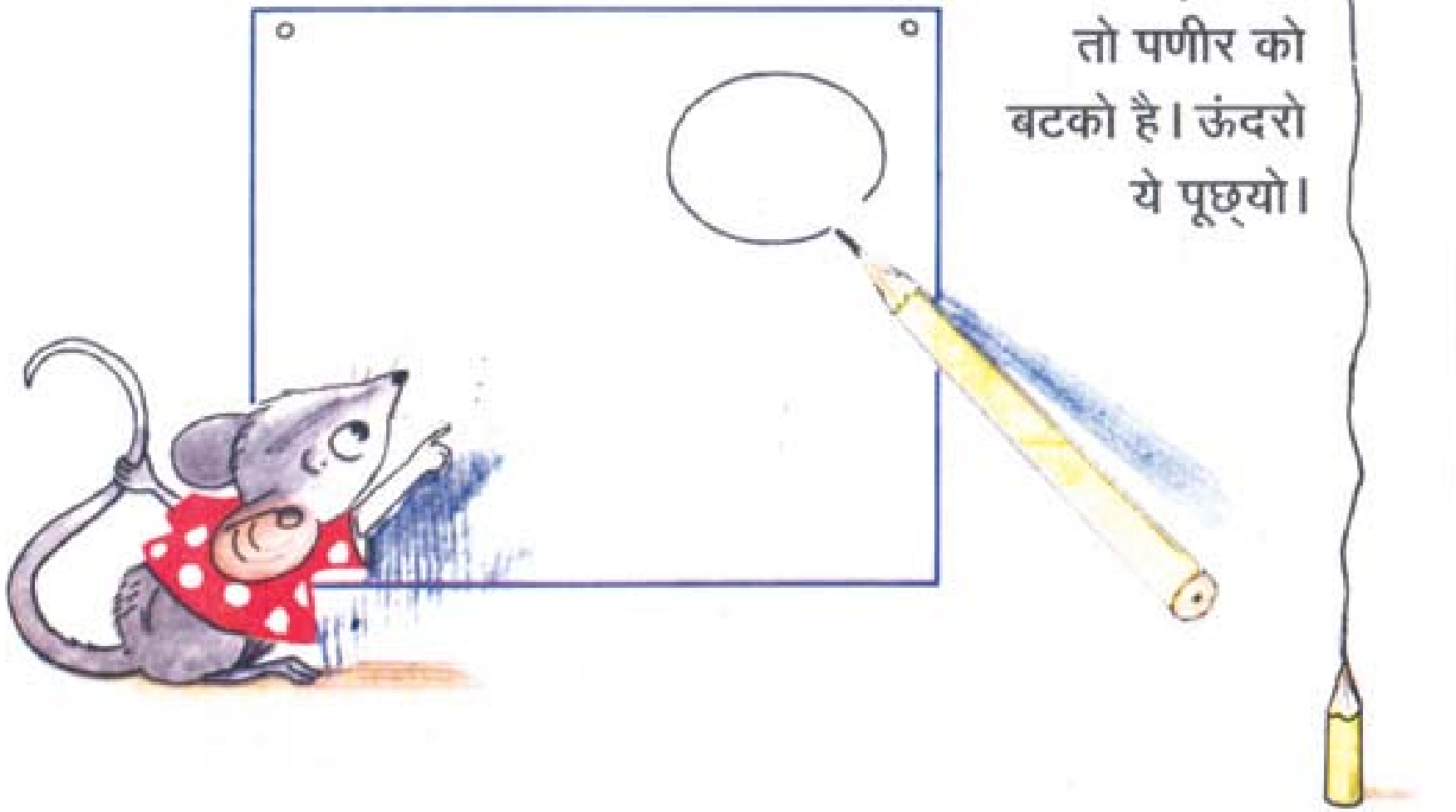

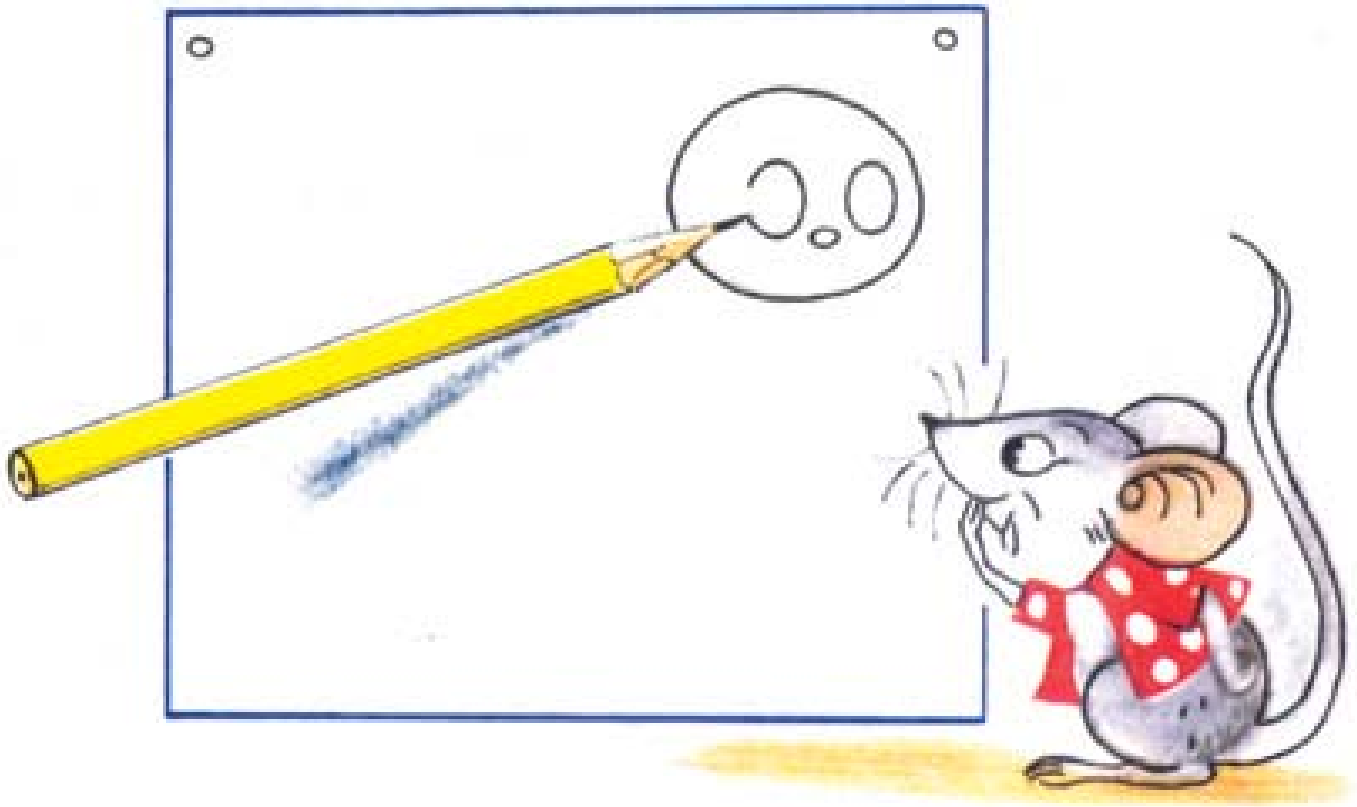

''अच्छो! हां, इके पणीर समजी लाँ।'' पेम्सिल बोली। फेर पेम्सिल ये बड़ा गोला का माई में तीन छोटा गोला मांडी दिया।

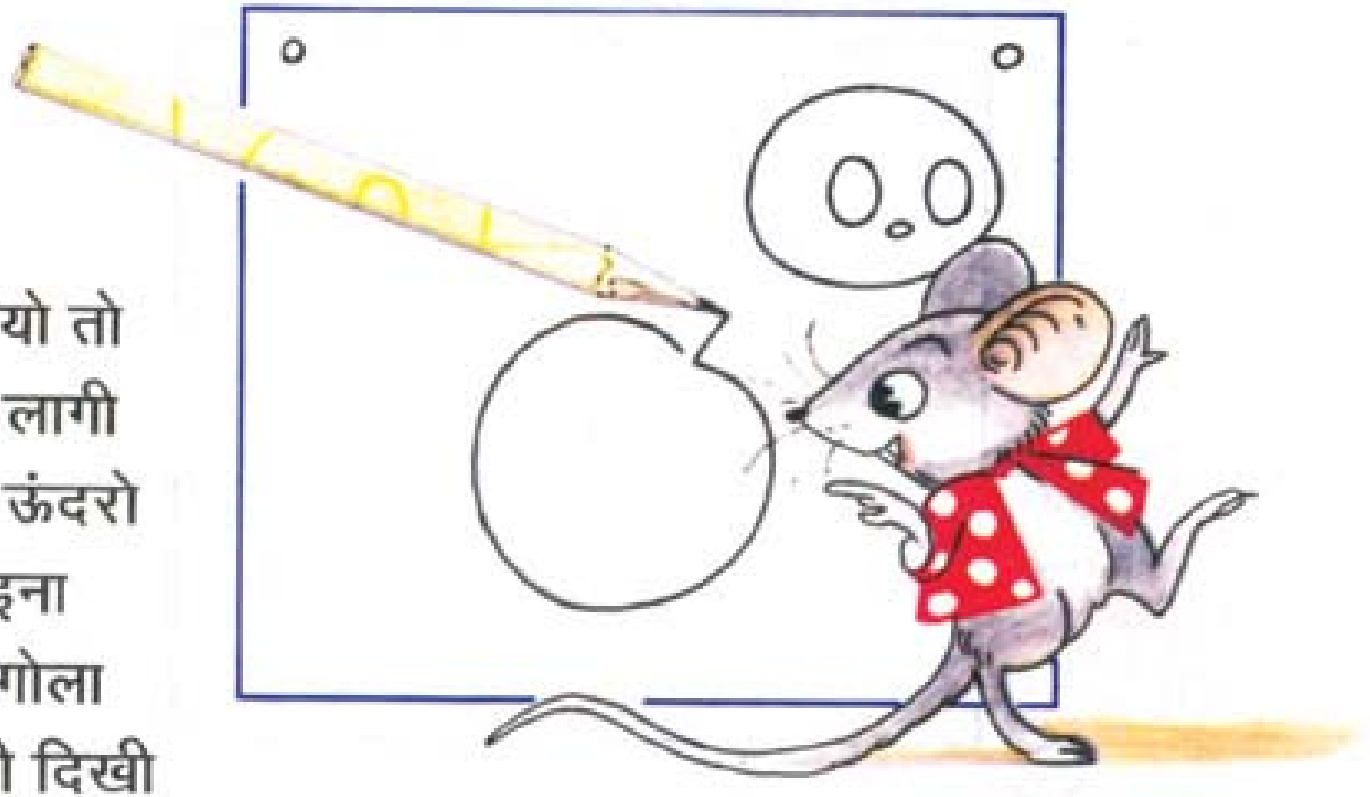

''अरे वा, यो तो नेठू पणीर लागी रियो हे।'' ऊंदरो बोल्यो। ''इना पणीर का गोला में काणा बी दिखी रिया हे।''

पेम्सिल ने हां करी के बड़ा गोला का नीचे एक बड़ो गोलो ओर मांड्यो।

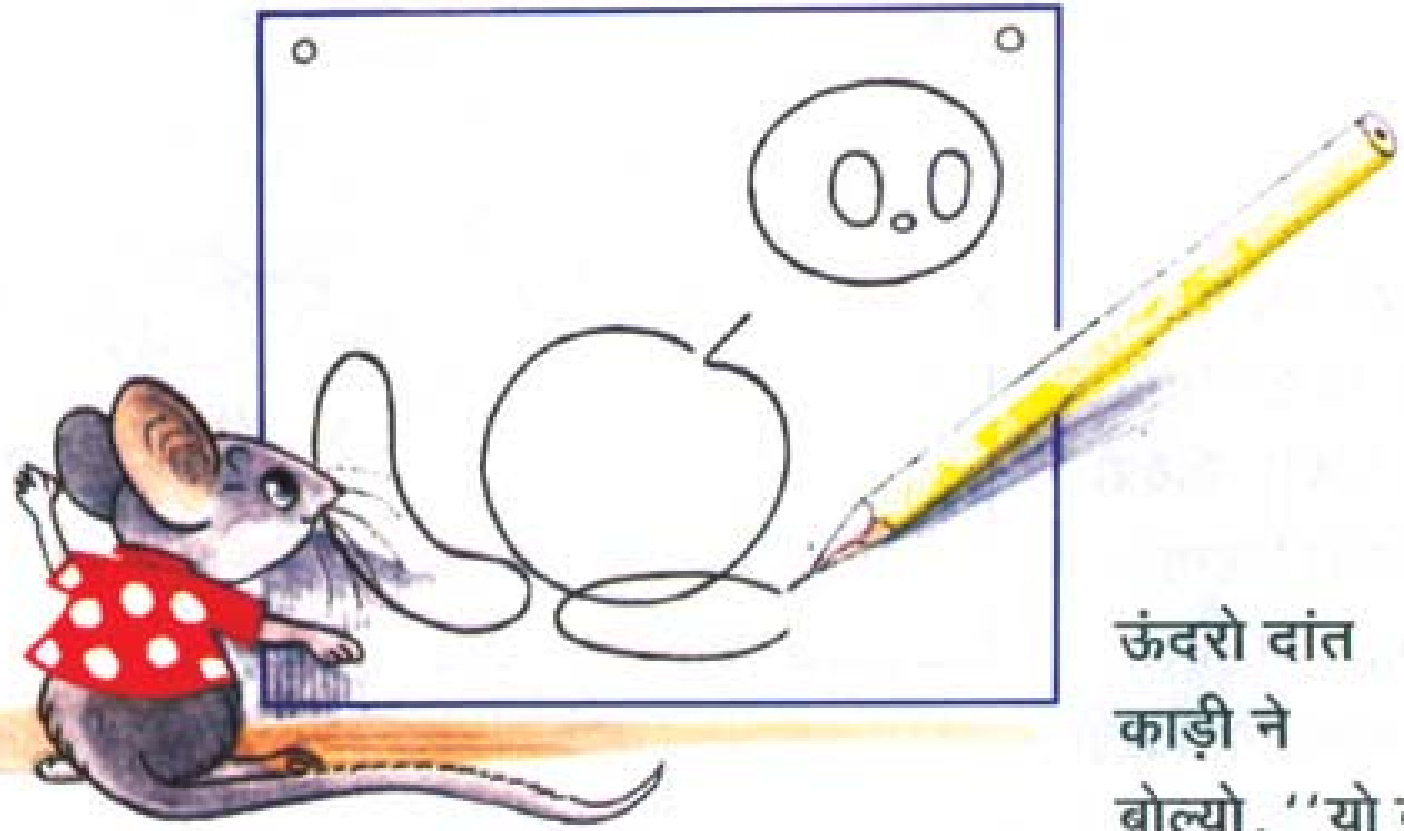

ऊंदरो दांत
काड़ी ने
बोल्यो, ''यो तो
सेवफल हे।''

''हां, इके सेवफल मानी लां,'' पेम्सिल बोली। अबे वा दूसरा बड़ा गोला कने चितरवा लागी।

''अरे गजब! अबे तो मजो अई
ग्यो। ई तो चमचम हे।'' ऊंदरा
का मुंडा में पाणी आवा लागो।

''उतावल कर!
हूं खऊंगा।''

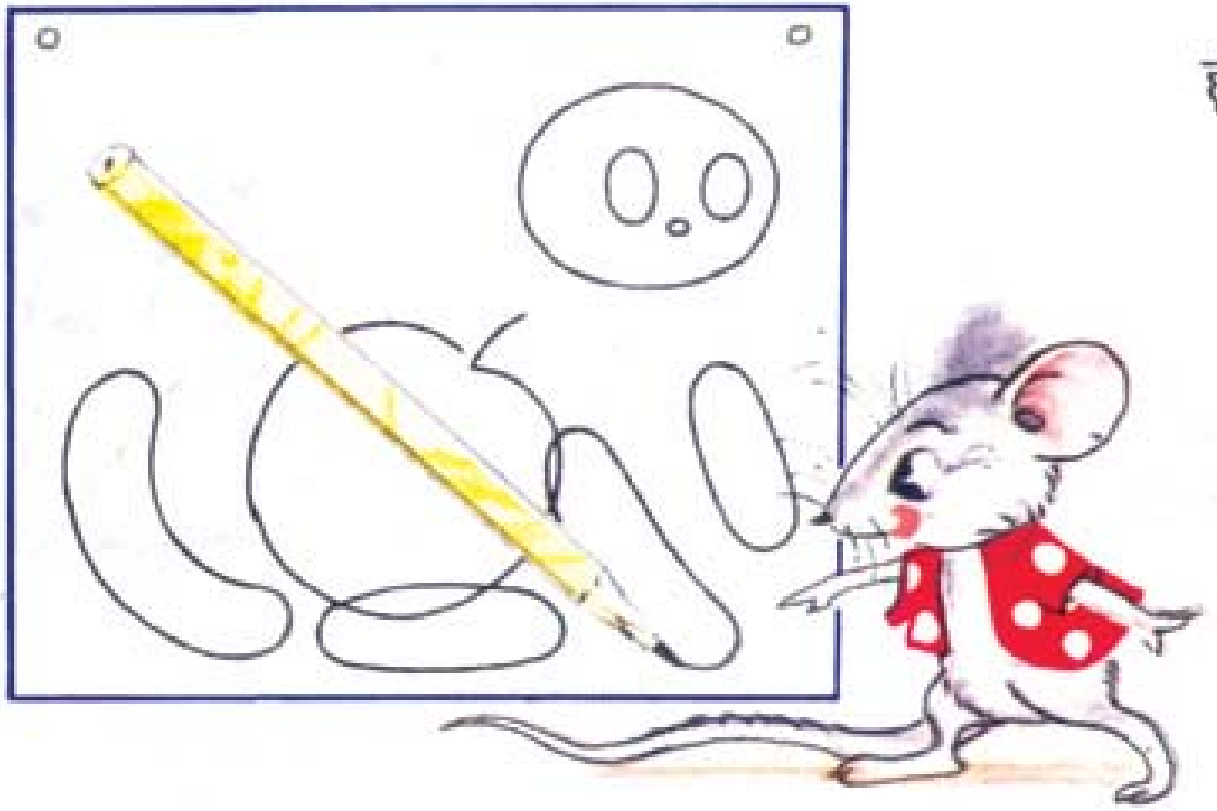

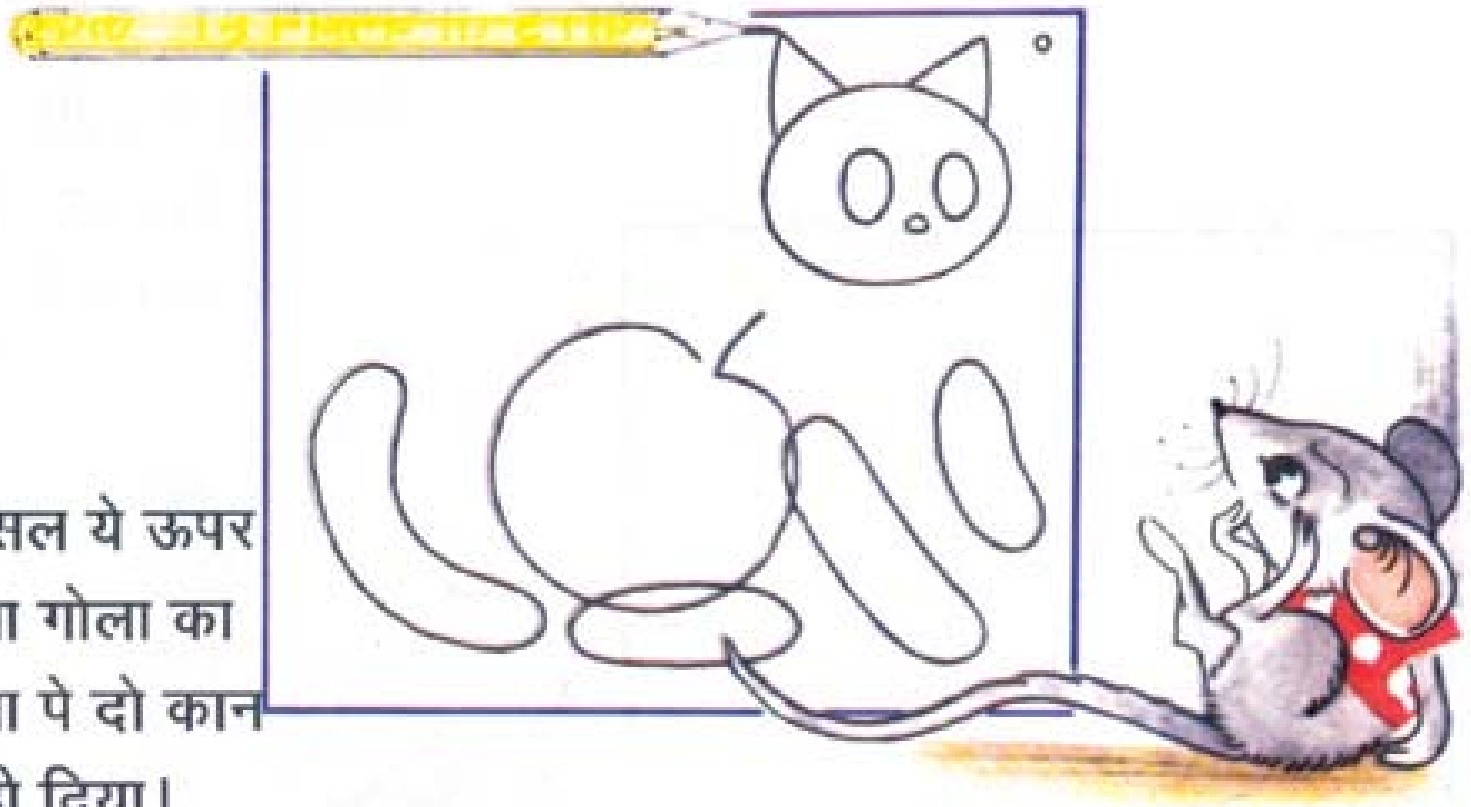

पेन्सिल ये ऊपर
वाला गोला का
माथा पे दो कान
मांडी दिया।

''अरे, अरे यूं कईं करे,'' ऊंदरो घबरई ने चिल्लाणो।
''या तो मिनकी सरकी मांडी दी। अबे आगे मत मांड।''

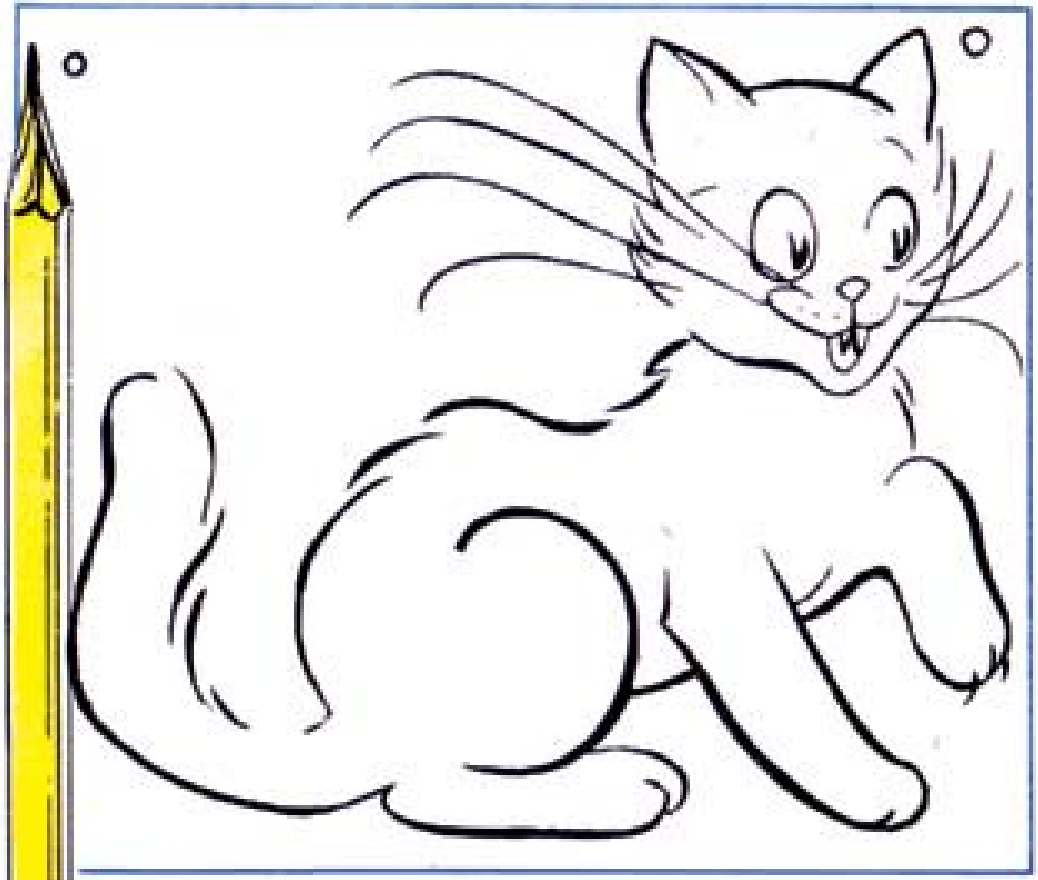

पण पेन्सिल मांडतीज गई। पेन्सिल ये ऊपर का गोला पे लम्बी-लम्बी मूंछा ने मुंडो मांडी दियो।

ऊंदरो डरी ने चिल्लाणो ''अरे बाप रे। यो तो असली को मिनको लागी रियो हे। म्हंखे बचाओ।''

एतरो कई ने ऊंदरो दोड़ी ने अपणा दर में भरई ग्यो। या वारता थी ऊंदरा ने पेम्सिल की।

कईं तम एक एसो फोटू मांडी सको जिके देखी ने ऊंदरो डरी जावे।